राज्य अध्याय 13

1	**प्रार्थना करना**

समूह का अगुवा। अपनी आत्मा में होकर परमेश्वर की अगुवाई के लिए, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशील होने के लिए और उसकी आवाज़ को सुनने क लिए ***प्रार्थना*** करें। अपने समूह तथा परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार प्रचार करने से सम्बन्धित इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) ***(शांत समय)*** **1राजाओं 3,11,17 व 18**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से *पढ़ें)* कि अपने दिये गये अनुच्छेद (1राजाओं 3,11,17 व 18) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) ***(मसीही कलीसिया)*** **(1) 1पतरस 2:5**

स्मरण पदों की 10 श्रृंखला (ण) "मसीह कलीसिया" के बारे में है। पांच स्मरण पदों के शीर्षक निम्नलिखित हैं:

(1) कलीसिया का स्वरूप। 1पतरस 2:5।
(2) कलीसिया में पायी जाने वाली गतिविधियां। प्रेरितों के काम 2:42।
(3) कलीसिया की सेवकाईयां। इफिसियों 4:12-13।
(4) कलीसिया के अगुवों का लक्ष्य। प्रेरितों के काम 20:28।
(5) कसीसिया में महिमा। इफिसियों 3:20-21।

दो दो करके ***अवलोकन करें।***

(1) कलीसिया का स्वरूप। 1पतरस 2:5। तुम भी अप जीवते पत्थरों के समान आत्मिक घर बनते जाते हो, जिससे याजकों का पवित्र समज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हैं।

4	***शिक्षा देना*** *(85 मिनट)* ***(यीशु के दृष्टांत)*** **विवाह का भोज**

मत्ती 22:1-14 में दिया गया "विवाह के भोज का दृष्टान्त"

परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने से संबंधित शर्तों के बारे में।

"एक दृष्टान्त" स्वर्गीय अर्थ को समझाने के लिए एक ज़मीनी या भौतिक कहानी होती है। यह कहानी जीवन से जुड़ी हुई सच्ची घटना या काल्पनिक कहानी होती है, जिससे एक आत्मिक सच्चाई को सिखाया जाता है। यीशु ने सार्वजनिक स्थलों और रोज़ मर्रा की ज़िन्दगी से जुड़ी चीज़ों व घटनाओं का इस्तेमाल परमेश्वर के राज्य के भेदों को प्रगट करने और लोगों की उनकी असलीयत दिखाने और उन्हें अपने जीवन में परिवर्तन की आवश्यकता बताने के लिए किया। हम इस दृष्टान्त का अध्ययन दृष्टान्त का अध्ययन करने वाले छः निर्देशों के आधार पर करेगें। **(नियमावली 9 में, परिशिष्ट 1 को देखें)।**

पढ़ें मत्ती 22:1-14।

---

1. दृष्टान्त में बतायी गयी मूल कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टान्त एक प्रतिकात्मक रूप में बताया जाता है जिसका अपना एक आत्मिक अर्थ होता है। इसलिए हम सबसे पहले उस वचनों को, कहानी की सभ्यता और उसके ऐतिहासिक तथ्यों और कहानी की पृष्ठभूमि को पढ़ेंगें।

चर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तथ्य कौन से हैं?

ध्यान दें।

इस दृष्टान्त के बहुत से मायने हैं और इसके तीन भागों को एक ही दृष्टान्त में समावेशित तीन दृष्टान्तों के तौर पर देखा जा सकता है।

कहानी का पहला भाग राजा के आमन्त्रण को अस्वीकार किये जाने के बारे में बताता है। एक राजा ने अपने बेटे के विवाह पर एक भोज रखा। राजा ने अपने मेहमानों के लिए तीन बार आमन्त्रण भेजा। पहले उसने उन्हें विवाह के भोज में आमन्त्रित किया। फिर से, उसने मेहमानों को विवाह भोज में आने का आमन्त्रण दिया। और अन्त में, फिर उसने अपने लोगों को यह कह कर आमन्त्रण देने के लिए भेजा कि सब कुछ तैयार हो चुका है तुम विवाह भोज में जरूर से आना(पद 3-4)। यहूदियों में यह कोई असामान्य बात नहीं थी कि वे पहले लोगों को सामान्यतः आमन्त्रण भेजें और फिर बाद में आमंत्रित लोगों को पुनः विवाह भोज में आने के लिए बुलावा भेजें (ऐस्तेर 5:8; 6:14)। लोगों ने आमन्त्रण पर कोई ध्यान ही नहीं दिया, उन्होंने दासों के साथ दुर्व्यवहार किया वरन उन्हें मार दिया। उन दिनों में राजा के आमन्त्रण को अस्वीकार करना स्वीकार नहीं किया जाता था और इसके लिए उन्हें गम्भीर दण्ड भुगतना पड़ता था। इसीलिए यीशु ने कहा,"तब राजा को क्रोध आया, और उसने अपनी सेना भेजकर उन हत्यारों का नाश किया, और उनके नगर को फूंक दिया। (पद 5-7)

कहानी का दूसरा भाग विवाह के घर को अतिथियों से भरने के बारे में बताता है। राजा ने मूल रूप से बुलाये गये अतिथियों को योग्य न जाना इसलिए उसने उन्हें दोबारा आमन्त्रण नहीं भेजा। लेकिन वह सुनिश्चित था कि वह अपने पुत्र का विवाह बहुत धूम धाम से करने का रहा है। इसलिए उसने अपने लोगों को चोराहों पर और सार्वजनिक जगहों पर भेजा और कहा कि जो कोई दिखे उसे आमंत्रित करो। ऐसा करने से विवाह का घर अतिथियों से भर गया। *राजा की योजना कभी असफल नहीं हो सकती और न होगी!*

कहानी का तीसरा भाग उस व्यक्ति के बारे में हैं जिसने विवाह के वस्त्र नहीं पहिने हुए थे। जब राजा अपने मेहमानों से मिलने के लिए आया, तो उसने ध्यान दिया कि वहां पर एक आदमी है

जिसने विवाह के वस्त्र नहीं पहिन रखे हैं। ऐसे ऐतिहासिक प्रमाण मौजूद है जिसके अन्तर्गत बाइबल के काल के बाद भी पूरब में यदि किसी को राजा के दरबार में हाजिर होने के लिए बुलाया जाता था तो उसको दरबार में आते वक्त पहिनने के लिए राजा की ओर से एक पोशाक भेजी जाती थी। इस दृष्टान्त में,राजा हर एक अतिथि से करता है कि वह विवाह में विवाह के वस्त्र पहिनकर आये। जिस व्यक्ति ने विवाह के वस्त्र नहीं पहिने थे उसके पास उसे न पहिनने का कोई बहाना नहीं था। तब राजा ने अपने दासों का आदेश दिया कि उसे उठाकर अंधियारे में फेंक दिया जाये जहां रोना और दांत पीसना होगा।

---

2. वर्तमान संदर्भ का मूल्यांकन करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहिचानें।

परिचय। दृष्टान्त की "कहानी के" संदर्भ में दृष्टान्त की "परिस्थिति" और "व्याख्या या अनुप्रयोग" हो सकते हैं। दृष्टान्त की परिस्थिति दृष्टान्त बताये जाने के *माहौल* या उपलक्ष्य के बारे में बता सकती है या यह बता सकती है कि किस *माहौल* में वह दृष्टान्त बताया गया था। कहानी की परिस्थिति कहानी प्रायः कहानी के *पहले* पायी जाती है और उसकी व्याख्या या उसका अनुप्रयोग दृष्टान्त की कहानी के *बाद* में पाया जाता है।

खोजें व चर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है?

ध्यान दें।

(1) इस दृष्टान्त की परिस्थिति मत्ती अध्याय 21 व 22 में पायी जाती है।

यह परिस्थिति यीशु मसीह के क्रूस पर चढ़ाये जाने से केवल एक सप्ताह पहले की है। यीशु ने यरूशलेम में प्रवेश किया और भीड़ ने उसका स्वागत आने वाले मसीहा के रूप में किया। उसने आकर मन्दिर में कारोबार करने वाले सारे व्यापारियों को वहां से निकाल दिया, जिन्होंने सम्भवतः अराधनालय के याजकों को वहां दुकाने लगाने के लिए पैसे दिये होगें। मन्दिर अर्थात अराधनालय में, उसने अंधे को आंखें दीं और लंगड़े को चंगा किया और उसे देखकर बच्चे चिल्ला उठे कि आने वाला मसीहा यही है। केवल महायजक और व्यवस्थापकों ने ही यीशु मसीह का यरूशलेम में, मन्दिर में या अपने ह्रदय में स्वागत नहीं किया। फलहीन अंजीर के वृक्ष का शाप देने के बाद महायाजक और इस्राएल के प्राचीनों ने यीशु के अधिकार पर प्रश्न उठाये, उस समय यीशु ने तीन दृष्टान्त कहेः दो पुत्रों का दृष्टान्त, दुष्ट किसानों का दृष्टान्त और विवाह भोज का दृष्टान्त।

इससे साफ होता है कि जब विवाह भोज का दृष्टान्त कहा गया था तो *यीशु के प्रति लोगों का मिज़ाज खराब था और इस्राएल के धार्मिक और राजनैतिक अगुवे यीशु मसीह के विरुद्ध थे।* उन्होंने और उनके अनुयायियों ने यीशु को मसीह मानने से इनकार कर दिया था, उन्होंने उसके द्वारा की गयी चंगाईयों और आश्चर्यों को शैतान की सामर्थ्य द्वारा किये गये कार्य कहा, और उन्होंने उसे सुसमाचार प्रचार करने वाले एक शिक्षक या प्रचारक के रूप में भी स्वीकार नहीं किया। इसके अलावा उन्हें पहले ही उसे मारने की योजना बना ली थी!

(2) दृष्टान्त की कहानी मत्ती 22:2–13 में लिखी हुई है

(3) इस दृष्टान्त की व्याख्या और उसका अनुप्रयोग मत्ती 22:14 में दिया गया है।

वहां पर लिखा है कि, "बुलाये तो बहुत गये हैं लेकिन चुने हुए थोड़े हैं।" हालांकि दूर दूर तक और

बहुत से लोगों में प्रचार किया गया है परन्तु ज्यादातर लोग इस दृष्टान्त में बताये गये व्यक्ति के समान होगेंः जिन्होंने सुना तो सही लेकिन विश्वास नहीं किया। अन्तिम निष्कर्ष यह निकलता है कि, *परमेश्वर के राज्य के वारिस बनना मनुष्य की उपलब्धि नहीं है, वरन् यह परमेश्वर के अनुग्रह से मिला हुआ वरदान या तोहफा है।* यूहन्ना 15:16 और 2थिस्लुनिकियों 2:13-14 के अनुसार, परमेश्वर ही खुद तक पहुंचने वाले सर्वश्रेष्ठ मार्ग के लिए लोगों को चुनते और बुलाते है।

---

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।

परिचय। यीशु ने मन में ऐसा नहीं ठाना था कि उनके द्वारा बताये गये दृष्टान्त की कहानी के हर भाग का कोई न कोई आत्मिक अभिप्राय जरूर हो। कहानी के अन्दर पाया जाने वाला प्रासंगिक विवरण वह विवरण है जो दृष्टान्त के केन्द्र बिन्दू या मुख्य विषय या उसकी शिक्षा की ओर संकेत करता है। इसलिए हमें दृष्टान्त की कहानी के हर एक भाग के आत्मिक अभिप्राय की खोज में नहीं लगे रहना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन सा वर्णन वास्तव में जरूरी या प्रासंगिक हैं?

ध्यान दें। क्योंकि अगर यीशु ने किसी बात का वर्णन नहीं किया है तो, इसका अर्थ है कि जरूरी या प्रासंगिक बात संदर्भ और बाइबल में लिखे किसी अन्य सामान अर्थ वाले अनुच्छेद पर निर्भर होगा।

स्वर्ग का राज्य (परमेश्वर का राज्य)। जब भी कभी यीशु कहते हैं, "परमेश्वर का राज्य *ऐसा* है..." (मत्ती 22:2) तो वह वहां पर सिखाना चाहते हैं किः

- पुराने नियम में *पुराने समय में* परमेश्वर के राज्य के दौरान क्या हुआ था।
- नये नियम के दौर में *वर्तमान काल में* परमेश्वर के राज्य में क्या हो रहा है।
- और *आने वाले समय में* निश्चय तौर पर क्या होने वाला है।

न्याय के अन्तिम दिन में, दृष्टान्त में दर्शायी सभी घटनाएं निश्चय तौर पर पूरी होगीं। इसका अर्थ है कि वर्तमान काल में जीवन व्यतीत करने वाले लोग भी इस दृष्टान्त के वर्णन में शामिल हैं। यीशु मसीह के हर एक दृष्टान्त में आपके और मेरे लिए आज एक संदेश है!!!

राजा। "राजा" (मत्ती 22:2) परमेश्वर को दर्शाता है, वह पहले लोगों को आमन्त्रित करता है और बाद में आमन्त्रित लोगों को बुलाता है। पद 14 के अनुप्रयोग के हिसाब से वह केवल आमन्त्रित करता या बुलाता नहीं है वरन वह चुनता भी है। यह एक प्रासंगिक विवरण है।

पुत्र। यह सुझाव बहुत प्रबल है "पुत्र"(मत्ती 22:2) यीशु मसीह का दर्शाता है, क्योंकि वह ही परमेश्वर का पुत्र है। फिर भी हम इसे पक्के तौर पर नहीं कह सकते, क्योंकि उसका जिक्र बाद में नहीं किया गया है और हर कोई चाहेगा कि यदि वह वास्तव में मसीह को प्रदर्शित करता है तो उसे अधिक मुख्य भूमिका अदा करनी चाहिए थी। क्योंकि इस बात का कोई वर्णन नहीं किया गया, और ही कभी बाद में उसका कोई जिक्र किया गया, इसलिए वह **इस कहानी में** प्रासंगिक पात्र नहीं हे। राजा और उसके बेटे के जिक्र किये जाने से ऐसा प्रतीत होता है कि यह एक बहुत महत्वूपर्ण और राजकीय विवाह भोज था।

विवाह का भोज। विवाह का भोज (मत्ती 22:2) एक प्रासंगिक विवरण है। "विवाह का भोज" परमेश्वर के राज्य के अन्तिम स्तर अर्थात मसीह के दूसरे आगमन को दर्शाता है (देखें, प्रकाशितवाक्य 19:7)।

यह यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर आनन्द और नये स्वर्ग और नयी पृथ्वी पर जीवन व्यतीत करने के आनन्द को प्रगट करता है, जहां पर हर एक जन के द्वारा मसीह में परमेश्वर के शासन को बहुत से स्वीकार किया जाएगा। इसमें ऐसा दर्शाया गया है कि एक विवाह के भोज का आयोजन एक बड़े सभागार में किया गया है और जहां पर मेहमान एक साथ उस मेज़ के चारों ओर इकट्ठा है जो पूरी तरह से भोजन वस्तुओं से भरी हुई है। मेजबान और मेहमान आपस में बैठकर खुशी से बातें कर रहे हैं।

"विवाह का भोज" मूल रूप से बहुवचन और एकवचन में बिना किसी विशेष मतलब के बोला गया है। (तुलना करें पद 2–4 की 8 पद के साथ)। बहुवचन, अर्थात "अनेक विवाह उत्सव", उस स्थिति में कहा गया होगा जब विवाह उत्सव बहुत दिनों तक चला होगा (न्यायियों 14:17) और उसके उत्सव की बहुत सी गतिविधियां शामिल रही होंगी।

पहले समूह को भेजे गये प्रथम तीन आमन्त्रण। पहले समूह को भेजे गये प्रथम तीन आमन्त्रण (मत्ती 22:3क, 3ख और 4) प्रासंगिक हैं। वे दर्शात हैं कि परमेश्वर सम्पूर्ण पुराने नियम से लेकर यीशु मसीह के प्रथम आगमन तक इस्राएल राष्ट्र को आमन्त्रण भेज रहे थे। वे उस महान प्रेम और अपरम्पार धीरज को दर्शाते हैं जिसके द्वारा जिसके द्वारा परमेश्वर ने इस्राएल राष्ट्र को अपने पास तक बुलाया था (रोमियों 10:21)। इसकी तुलना आप वर्तमान समय में यहूदी और उसके विपरीत अन्यजातियों (2पतरस 3:9) के प्रति उसके प्रेम और धीरज से करें।

- <u>पहला आमन्त्रण।</u> पहला आमन्त्रण प्रासंगिक है। राजा द्वारा भेजा गया मूल या असली आमन्त्रण बहुत दृढ़ता के साथ परमेश्वर द्वारा अब्राहम, इसहाक और याकूब तथा उनके वंशजों को बुलाये जाने को (उत्पत्ती 12:1–3; 26:24; 28:13–15) और किसी हद तक परमेश्वर द्वारा मूसा को बुलाये जाने को दर्शाता है(निर्गमन 3)। उनमें से किसी ने भी परमेश्वर की बुलाहट को अस्वीकार नहीं किया।
- <u>दूसरा आमन्त्रण।</u> दूसरा आमन्त्रण भी प्रासंगिक है। दृष्टान्त की कहानी का मुख्य सन्दर्भ पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के प्रति लोगों द्वारा किया गया बुरा व्यवहार और विरोध था। अतः राजा द्वारा भेजा गया दूसरा आमन्त्रण जो पहले समूह के "दासों" द्वारा भेजा गया था स्वाभाविक तौर पर दर्शाता है कि परमेश्वर इस्रासल से पुराने नियम में शमूएल, एलिय्याह, एलीशा, यिर्मयाह और दूसरे भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बार बार बातें कर रहे हैं (मत्ती 21:34–35)।
- <u>तीसरा आमन्त्रण।</u> तीसरा आमन्त्रण भी प्रासंगिक है। राजा द्वारा भेजा गया तीसरा आमन्त्रण स्वाभाविक तौर पर दर्शाता है कि परमेश्वर ने इस्राएल से यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले, स्वयं यीशु और यीशु के चेलों के द्वारा बातचीत की (लूका 9:1–2; 10:1–2) और बाइ में स्तिफनुस (प्रेरितों के काम 6:8–7:60) और पौलुस (प्रेरितों 13:13–52) के द्वारा बातें की हैं।

ये तीनों की आमन्त्रण पुराने नियम में परमेश्वर के चुने हुए लोगों को दिये गये थे अर्थात *इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र* को दिये गये थे(व्यवस्थाविवरण 4:9–13,32–36)।

राजा के निमन्त्रण के प्रति लोगों का प्रतिउत्तर। यह प्रासंगिक है(मत्ती 22:5–7)। अगर देखा जाये तो, पुराने नियम के समय में इस्राएलियों ने और यीशु मसीह प्रथम आगमन के समय में यहूदियों ने

राजा के निमन्त्रण पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। दृष्टान्त के सन्दर्भ में देखें, तो यह यीशु द्वरा परमेश्वर के राज्य के आमन्त्रण के प्रति इस्राएलियों के उदासीन व्यवहार और अति बैर को प्रगट करता है। इस्राएल के लोग स्वर्गीय बातों, या उद्धार जैसे आत्मिक मुद्दों के कहीं ज्यादा ज़मीनी, व कृषि जैसी भौतिक व वाणिज्य के मामलों में ज्यादा रूची लेने वाले थे (लूका 14:18-20; 17: 26-30)। उन्होंने मसीह के आश्चर्यकर्मों को देखा और उसकी शिक्षाओं को सुना और फिर भी वे पश्चाताप करने और विश्वास करने के लिए तैयार नहीं थे (मत्ती 21:31-32)।

यह भी सच्चाई है कि उन्होंने राजा के दासों के साथ बुरा व्यवहार किया और उन्हें मार दिया। यह इस्राएलियों द्वारा पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं से किये गये व्यवहार को दर्शाता है (मत्ती 21:35-36; 23:33-36)। यीशु मसीह के साथ में किया गया उदासीन व बैर, एक बहुत बड़ा कारण होगा जिसके लिए उन्हें मसीह के दूसरे आगमन पर दण्ड मिलेगा, चाहे वह यहूदियों द्वारा किया गया हो या गैर यहूदियों द्वारा।

अस्वीकार करने वालों की सज़ा। यह भी प्रासंगिक है (मत्ती 22:7)। राजा ने अन्त में इस तरह से कहा कि मूल रूप से बुलाये गये मेहमान इस योग्य नहीं ठहरे कि उन्हें उसके विवाह उत्सव में शामिल किया जाये। उन हत्यारों का नाश किया जाना और राजा के सिपाहियों द्वारा उनके शहरों को जला देना सत्य घटनाएं थीं। क्योंकि ये घटनाएं वास्तव में घट चुकी थीं, इसलिए यह आसानी से समझा जा सकता है कि यीशु ने *किन्हें* अपने मन में रखकर ये बातें कहीं। 70 ईसा.पश्चात तीतुस, जो एक रोमी सम्राट का पुत्र था (वैस्पेशियन्स, 69-79ई.प), ने यरूशेलम पर अधिकार कर लिया, उसने वहां के मन्दिर और ज्यादातर यरूशलेम को नाश कर दिया, और दस लाख से ज्यादा यहूदियों को मार डाला, जिससे कि इस्राएल राष्ट्र एक राजनैतिक इकाई का तौर पर खत्म हो जाये (जोसेफस : "हिस्ट्री ऑफ द ज्यूस वार, किताब 4-6)

फिर भी, यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान पहले ही परमेश्वर के चुने हुए विशेष लोगों के रूप में इस्राएल का अन्त था (मत्ती 8:11-12; 21:41-43; 27:51;मत्ती 10:5-6 की तुलना मत्ती 28:18-20 से करें)। इसका अर्थ यह बिल्कुल नहीं है कि परमेश्वर न सारे यहूदियों को अस्वीकार कर दिया है (रोमियों 11:1-10)। जो लोग उस विवाह भोज में आये उनमें से बहुत से यहूदी थे!

दूसरे समूह के लोगों को दिया गया अन्तिम निमन्त्रण। यह प्रासंगिक है (मत्ती 22:8-10 क)। यह परमेश्वर के उस आमन्त्रण को प्रगट करता है जो हर उस व्यक्ति के लिए है जो उसकी बात को सुनता है। यह निमन्त्रण केवल यीशु मसीह के दूसरे आगमन तक मान्य रहेगा (2 कुरिन्थियों 6:2)। यह प्रगट करता है कि परमेश्वर अपने लक्ष्य तक पहुचने के लिए धीरज धरते हैं: खास तौर पर, बारात घर को भरने के लिए!

यह दूसरे समूह के लोग चुंगी लेने वालों और पापियों (मत्ती 21:31-32) और अन्यजातियों (मत्ती 8:11) को और उन्हें दर्शाता है जो इस्राएल के धार्मिक व राजनैतिक अगुवों की दृष्टि में तुच्छ जाने जाते हैं। क्योंकि यीशु के प्रथम आगमन का, मन फिराव और पापों से क्षमा का प्रचार परमेश्वर के दासों द्वारा संसार की सभी जातियों में किया गया है (मत्ती 24:14;28: 18-20)। राजा तब तक लोगों को बुलाता रहेगा जब तक कि वह विवाह गृह पूरी तरह से भर न जाएं। राजा ने ठान लिया है और उसकी योजना न असफल हो सकती है और न होगी। यह उल्लेख दर्शाता है कि परमेश्वर ने

अपने उद्देश्य और योजना को निर्धारित कर लिया है जिसे हम नये नियम में पाते भी हैं, वह कभी असफल नहीं हो सकती है और न असफल होगी। (यशायाह 14:24,27)!

विवाह के घर को अच्छी और बुरी चीजें भरना। यह प्रासंगिक है (मत्ती 22:10ख)। क्योंकि यीशु के प्रथम आगमन का, उद्धार का सुसमाचार (और मसीह के राजअधिकार) का प्रचार परमेश्वर के दासों द्वारा बिना वर्ण जाति, राष्ट्रीयता, लिंग और भौतिक दशा में भेदभाव किये संसार की सभी जातियों में किया गया है। यीशु मसीह के प्रथम आगमन से ही संसार भर में कोई भी राष्ट्र अब परमेश्वर के लिए अनोखा नहीं है (यूहन्ना 1:10-18; रोमियों 10: 12-13; 1कुरिन्थियों 12:13; गलातियों 3:28 और कुलुस्सियों 3:11)! बहुत से यहूदियों और बहुत से गैर मसीहियों को परमेश्वर के राज्य में लाया जा चुका है।

लेकिन उनमें से सभी लोग आत्मा में नया जनम पाये हुए विश्वासी नहीं हैं।

- जैसा कि गेहूं के बीच में जंगली पौधों का दृष्टान्त भी कहता है (मत्ती 13:24-30)
- मछली के जाल का दृष्टान्त (मत्ती 13:47-50)
- विवाह के घर का दृष्टान्त (मत्ती 22:1-14) हमें बताता है कि परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार लगातार अच्छे और बुरे लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

मानवीय स्तर के अनुसार लोग "अच्छे" या "बुरे" हो सकते हैं। दुनिया की निगाहों में वे आदरणीय, अति प्रचलित या बहुत धार्मिक हो सकते हैं, लेकिन उनमें चोर, वैश्याएं, चुंगी लेने वाले और हत्यारे भी हो सकते हैं। (मत्ती 21:31)।

या *परमेश्वर के स्तर पर* लोग ''भले'' या ''बुरे'' हो सकते हैं, जो सकता है कि उनके पास विवाह के कपड़े हों या न हों। सच्चे और नामधारी दोनों ही प्रकार के मसीही परमेश्वर के राज्य में जाने का दावा करते हैं (मत्ती 7:21-23) और वे मसीह के दूसरे आगमन तक वर्तमान समय में (कलीसिया में) एक साथ परमेश्वर के राज्य में जीवन व्यतीत करते हैं। लेकिन इस काल के अन्त में, अर्थात अन्तिम न्याय के दिन जब कटनी का दिन होगा, यीशु मसीह और उसके स्वर्गदूत अविश्वासियों(अधर्मियों, नामधारी मसीहियों को) सच्चे विश्वासियों से (धर्मियों से) अलग करेगें (मत्ती 13:41; 25:32)!

विवाह के कपड़ों का पहनना। यह भी प्रासंगिक हैं (मत्ती 22:11-13)। हालांकि दृष्टान्त में मेहमानों को विवाह में आने के लिए विवाह के वस्त्रों को जिक्र नहीं किया गया है, लेकिन इस बात के बहुत से प्रमाण है कि उन दिनों में ऐसा ही किया जाता था। गरीबों में से बुलाये गये लोगों को पास इस प्रकार की पोशाक नहीं होती थी और वे किसी तरह से उसे ले भी नहीं सकते थे। लेकिन राजा को अपेक्षा थी कि हर एक जन राजकीय विवाह में विवाह के वस्त्र पहिनकर ही आये। बिना विवाह के वस्त्र पहिनकर आया व्यक्ति किसी तरह से सफाई पेश नहीं कर पाया कि उसने विवाह के वस्त्र क्योंकि नहीं पहिने थे।

बाइबल में कुछ महत्वपूर्ण गद्यांश हैं जिसमें कपड़ों को प्रतिकात्मक रूप में पेश किया गया है, उदाहरण के तौर पर, वह "मसीह और उसकी धार्मिकता और पवित्रता" (रोमियों 13:14; इफिसियों 4:24)। अन्त में स्वयं राजा ने बिना विवाह के कपड़े पहनकर आये हुए व्यक्ति को गम्भीर दण्ड की आज्ञा दी।

इसलिए इस दृष्टान्त में कपड़े पहिनने का अपना एक महत्व है। यह *उसके राज्य में प्रवेश करने के लिए परमेश्वर की एक शर्त है।*

---

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहिचानना।

परिचय। दृष्टान्त का मुख्य संदेश (प्रमुख विषय) या तो कहानी की व्याख्या या उसके अनुप्रयोग में छिपा होता है। जिस तरीके से स्वयं यीशु मसीह ने दृष्टान्त की व्याख्या की या उसका अनुप्रयोग किया, उसी से हमें पता चलता है की हम उस दृष्टान्त का क्या अर्थ निकाल सकते हैं। दृष्टान्त की सामान्यतः केवल एक शिक्षा होती है, अर्थात एक केन्द्र बिन्दू होता है। इसलिए, हमें कहानी के हर हिस्से से एक मतलब ढूंढ़ने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, वरन् हमेशा उसकी मुख्य शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 22:1–14 में दिया गया विवाह के घर का दृष्टान्त हमें " परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की शर्त " के बारे में बताता है।

उस दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए लोगों को परमेश्वर के निमन्त्रण का उत्तर देना चाहिए। और वे पमरेश्वर के राज्य में परमेश्वर की शर्तों पर प्रवेश करेगें, न कि अपनी शर्तो पर।" हर एक जन को परमेश्वर के अनुग्रहकारी निमन्त्रण को स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, क्योंकि जब दूसरे उसकी महिमा में प्रवेश कर रहे होंगे, वह अपना स्थान खो देगा।

लेकिन किसी भी जन को यह याद रखना चाहिए कि इस संसार में किसी कलीसिया में सदस्यता लेने का अर्थ नहीं है कि उसकी अनन्त राज्य में सदस्यता पक्की हो गयी है, अर्थात उसके उद्धार की पुष्टि नहीं हो गयी है। उद्धार के लिए वास्तव में यीशु मसीह को उसकी सिद्ध धार्मिकता और पवित्रता के साथ धारण करने की आवश्यकता है। केवल उसी से हमें उद्धार और नवीनीकरण की पुष्टि मिलती है।

परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर की शर्तो पर प्रवेश करना परमेश्वर के राज्य की एक बुनियादी विशेषता है। परमेश्वर के सच्चे लोगों ने "एक अच्छी हस्ती", "अच्छे काम" या "अपने मन–पसन्द धर्म" रूपी अपनी शर्तो को त्यागकर, परमेश्वर की शर्तो पर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश किया है और उसमें अपना जीवन व्यतीत कर रहें हैं।

---

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिये सामान्तर या पूरक गद्यांशों से करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान अर्थ वाले होते हैं और उनकी आपस में तुलना की जा सकती है। हालाकि, सारे दृष्टान्तों में दी गयी शिक्षा सामान्तर या पूरक शिक्षा होती है जिसे बाइबल के दूसरे गद्यांशों में सिखाया जाता है। ऐसे पूरक वचन को तलाश करने की कोशिश करें जिससे दृष्टान्त को समझने में आसानी होती हो। हमेशा दृष्टान्त के अर्थ की तुलना बाइबल की स्पष्ट शिक्षा के साथ करें।

(1) तीन दृष्टान्तों की तुलनाः
दो पुत्र, दुष्ट दास और विवाह का घर।

पढ़ें मत्ती 21:28–32; मत्ती 21:33–44; मत्ती 22:1–14।

मत्ती 21 और 22 में दिये गये तीन दृष्टान्तों को चरमोत्कर्ष क्रम में रखा गया है।

मत्ती 21:28-32 में दिया गया "दो पुत्रों का दृष्टान्त" यह सिखाता है कि जो लोग परमेश्वर की आज्ञाओं को नहीं मानते और यूहन्ना बपतिस्मा जैसे उसके दूतों अस्वीकार कर देते हैं, तो अपनी पश्चाताप हीन दशा में वे कभी परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर पाएंगें।

मत्ती 21:33-44 में दिया गया "दुष्ट दास" का दृष्टान्त सिखाता है कि जिन लोगों ने परमेश्वर के नबियों के साथ दुर्व्यवहार किया और उसके बेटे को भी मार दिया, उनका अन्त बहुत भयानक होगा और *उनका सारा अवसर और सौभाग्य दूसरे लोगों को दे दिया जाएगा।*

"विवाह के घर" का दृष्टान्त सिखाता है कि, जो लोग परमेश्वर के निमन्त्रण को अस्वीकार करते हैं, वे नाश किये जाएंगे और *जिन यहूदियों और यूनानियों को तुच्छ समझा गया वे परमेश्वर के राज्य (कलीसिया) में प्रवेश करेगें।* लेकिन, चाहे यहूदी हो या अन्यजातियों में से एक, प्रभु हर एक जन से यह चाहते हैं कि, वे विवाह के वस्त्र जरूर पहिने हुए हों।

(2) गैर यहूदी देशों के साथ इस्राएल देश के सम्बन्ध के प्रति परमेश्वर का दृष्टिकोण।

पढ़ें मत्ती 8:11-12; 21:41-44। तुलना करें मत्ती 10:5-6 की 24:14 और 28:18-20 के साथ। इसके अलावा पढ़ें यूहन्ना 10:14-16; प्रेरितों. 10:24-35,42-43; रोमियों 8:17; 2कुरिन्थियों 1:20; गलातियों 3:8-9; 3:23 से 4:7 तक; इफिसियों 3:4-6; कुलुस्सियों 3:9-12; 1पतरस 2:4-10; प्रकाशितवाक्य 5:9-10।

पुराने नियम के दौरान, इस्राएल के देश को दुनिया के सारे देशों की तुलना में *अधिक विशेषाधिकार प्रदान किये गये* थे (रोमियों 9:4-5; इफिसियों 2:11-12)। फिर भी, इस्राएल के लोग व्यवस्था से बंधा हुआ जीवन बिताते रहे। इस्राएलियों की दशा मसीह के प्रथम आगमन तक "एक नाबालिक की सी थी", जो अपने अभिभावकों और अपने न्यासियों के अधीन रहता है (आनुष्ठानिक नियमों के)(गलातियों 3:18-4:7)।

यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान ने "बैर ही दीवार" (आनुष्ठानिक नियम) को नाश कर दिया, जिससे इस्राएल दुनिया के बाकि देशों से अलग हो गया(इफिसियों 2:13-22; कुलुस्सियों 2:13-14)।

मसीह के प्रथम आगमन से लेकर उसके दूसरे आगमन तक, अन्यजातियों में से आने वाले मसीही लोग इस्राएल लोगों के साथ *बराबरी के हकदार अर्थात वारिस* `(इफिसियों 3:2-6)। वे भी एकमात्र और समान मसीह की देह अर्थात कलीसिया के अंग हैं। वे बराबरी से उन सभी प्रतिज्ञाओं के सहभागी हैं जो पुरानी वाचा के लोगों साथ और नयी वाचा के लोगों के साथ परमेश्वर ने की थी (2कुरिन्थियों 1:20)। <u>वर्तमान में केवल एक ही 'राष्ट्र' का परमेश्वर के साथ विशेष रिश्ता है, वह राष्ट्र यीशु मसीह में नया जन्म पाये हुए विश्वासियों से मिलकर बना है,</u> चाहे वे मूल रूप में यहूदियों में से हैं या अन्यजातियों में से (1कुरिन्थियों 12:13; 1पतरस 2:4-10)। "परमेश्वर द्वारा चुने हुए" एक मात्र लोगों में पुराने नियम के समय के विश्वासी और नये नियम के दौर के विश्वासी शामिल हैं,`जिसमें सभी जातियों, नागरिकता, लिंग और समाज के लोग आते हैं!

परमेश्वर के पास में उद्धार की दो योजनाएं नहीं हैंः एक यहूदियों के लिए और दूसरी गैर यहूदियों

के लिए। लोग चाहे पुराने नियम के हों या नये नियम के, उनका उद्धार विश्वास के द्वारा अनुग्रह से ही हुआ है (उत्पत्ति 15:6;यूहन्ना 14:6; प्रेरितों 4:12 ; इफिसियों 2:8-9)।

पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं की बातें "पर्दे" में छुपी रहती हैं और उन्हें केवल नये नियम के प्रकाशन के प्रकाश में ही पूरी तरह समझा जा सकता है। और पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं की भविष्यद्वाणियां केवल उन्हीं लोगों के लिए पूरी होती हैं जो यीशु की ओर फिरते हैं(2कुरिन्थियों 3:7-16)। पुराने नियम के वचन नये नियम की "वास्तविकता" की "परछाई" है (कुलुस्सियों 2:1; इब्रानियों 8:5; 10:1)। पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं को उस "भेद" के बारे में पता नहीं था, जो केवल नये नियम के प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर प्रगट किया गया था, कि, सुसमाचार के प्रचार किये जाने से नये नियम के दौरान सारी धरती पर यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले लोग पुराने नियम के समय में इस्राएल में मसीह पर विश्वास करने वाले लोगों के सोथ *बराबरी के वारिस होगें* (रोमियों 16:25-26; इफिसियों 3:4-6; 1पतरस 1:10-12; 2 पतरस 1:19)! इसलिए, पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों को, बिना नये नियम की मदद के नहीं समझा जा सकता।

(3) विवाह के वस्त्र पहिनने का अर्थ।

पढ़ें 2 राजा 10:18-22; प्रकाशितवाक्य 19:7-9। हमारे पास में इस बात के प्रमाण हैं कि बाइबल के समय में राजकीय विवाह में जाने के लिए विवाह के वस्त्रों को पहिनना बहुत जरूरी है। राजा येहू ने बाल के सेवकों के लिए एक बड़ी जेवनार का इन्तेज़ाम किया और उसने राजकीय वस्त्रों के प्रबन्धक से कहा कि वह सारे दासों के पहनने के लिए "वस्त्र" ले आये। इस तरह से उन्हें मृत्यु दण्ड देने से पहिले बहुत आसानी से पहिचाना सकता था।

और मसीह के दूसरे आगमन के बाद मेम्ने के विवाह में भी, "उस दुल्हन" ने जो सभी सच्चे मसीहियों का प्रतिनिधित्व करती है, अपने आपको पूरी तरह तैयार किया जिसे पहिनने के लिए अति उत्तम मखमल के वस्त्र दिये गये थे।

विवाह में आने वाले ज्यादातर लोग समाज के निचले तपके से आये थे (लूका 14:21-23) और उनके पास में शाही पोशाक नहीं हुआ करती थी। फिर भी राजा को अपेक्षा थी कि हर एक मेहमान शाही वस्त्र पहिनकर विवाह में आये। इसलिए, जिस व्यक्ति ने विवाह में विवाह का वस्त्र नहीं पहिना था *उसने विवाह के वस्त्र पहिनने से इनकार कर दिया था।* उस व्यक्ति के पास में कोई बहाना नहीं बचा हुआ था और उसे कठिन दण्ड का सामना करना पड़ा!

पढ़ें यशायाह 64:6; कुलुस्सियों 3:5-14। विवाह के वस्त्र का अभिप्राय, उद्धार के लिए आवश्यक हमारे भले काम या नैतिक भलाईयों से नहीं है, क्योंकि "हमारी मानवीय धार्मिकता और भले काम फटे और मैले चीथड़ों को समान है (गलातियों 3:16,21)। भला काम तो केवल एक ही है अर्थात यीशु मसीह पर उसके द्वारा प्रदान की गयी धार्मिकता पर विश्वास करना(यूहन्ना 6:29)।

पढ़ें अय्यूब 29:14; यशायाह 11:5; 61:10 रोमियों 13:14; गलातियों 3:27; इफिसियों 4:24; प्रकाशितवाक्य 19:7-8। विवाह के वस्त्र पहिने हुए लोग निम्न बातों के प्रतीक हैं:

- "जिन लोगों ने मेम्ने अर्थात यीशु मसीह के लहू से अपने वस्त्रों को धोकर अपने आप को श्वेत बना लिया है (प्रकाशितवाक्य 7:14)

- जिन्हें नये साचें में डाला गया है, जिन्हें परमेश्वर की सच्ची धार्मिकता और पवित्रता की समानता में रचा गया है।(इफिसियों 4:24)
- "जिन्होंने मसीह को पहिन लिया है"(रोमियों 13:14; गलातियों 3:27)। जिन्होंने मसीह में धार्मिकता, पवित्रता और उद्धार को स्वीकार कर लिया है (1कुरिन्थियों 1:30; 2कुरिन्थियों 5:21)।

"विवाह के वस्त्र" मसीह की धार्मिकता को प्रस्तुत करते हैं:

- जिसे मसीह ने अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा *हासिल* किया
- जिसे परमेश्वर ने विश्वासियों में कानूनी तौर पर *जोड़ दिया* है
- जिसे परमेश्वर ने पवित्रता के क्षेत्र में *प्रदान किया* है
- जिससे कि परमेश्वर विश्वासियों को अपनी नज़रों में सिद्ध धर्मी के रूप में *देख सके* और उनके साथ *व्यवहार कर* सके।
- ताकि विश्वासी लोग परमेश्वर की नज़रों में धार्मिकता का *जीवन व्यतीत कर सकें।*

विवाव का वस्त्र विश्वास के द्वारा अनुग्रह से धर्मी ठहराये जाने को दिखाता है। केवल इसी के द्वारा कोई जन पवित्र और धर्मी जीवन जी सकता है।?

---

6. दृष्टान्त की मुख्य शिक्षा का सारांश बताएं।

चर्चा करें। दृष्टान्त की मुख्य शिक्षा या संदेश क्या है?यीशु ने इस दृष्टान्त के द्वारा हमें क्या *समझाने* या *विश्वास* दिलाने की कोशिश की और वह हमें क्या *बनने* या क्या *करने* की शिक्षा देते हैं?

ध्यान दें।

(1) परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की शर्त केवल राजा पर निर्भर करती है।

"राजा" परमेश्वर को दर्शाता है जो लोगों को धीरज के साथ लगातार परमेश्वर के राज्य में आमन्त्रित करता है। लोगों को उसका आमन्त्रण स्वीकार करके राजा की शर्तों पर प्रवेश करना चाहिए अन्यथा उनका नाश हो जाएगा।

अन्य धर्म और उनके भविष्यद्वक्ता लोगों के सामने कई ऐसी शर्तों को रखते है जिसके द्वारा वे धार्मिकता को प्राप्त कर सकते हैं। जबकि बाइबल का परमेश्वर केवल इतना चाहता है कि एक विश्वोसी यीशु मसीह की सिद्ध धार्मिकता को धारण कर ले, जो परमेश्वर के अनुग्रह से विश्वासियों को प्रदान किया जाता है। उद्धार के लिए इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं है (यूहन्ना14:6; प्रेरितों 4:12)!

(2) यह दृष्टान्त अनेकों अभिप्रायों से भरा हुआ है और इसके तीन भागों को तीन अलग दृष्टान्तों के रूप में देखा जा सकता है, और हर एक दृष्टान्त का अपना ही अलग अर्थ है:

- कहानी का पहला भाग हमें राजा के निमन्त्रण को अस्वीकार किये जाने के बारे में बताता है। इसका अर्थ है कि अत्यधिक धीरजवन्त हैं खास तौर पर संसार में ईश्वररहित और दुष्ट लोगों के साथ। लेकिन परमेश्वर के धीरज की भी एक सीमा है (मत्ती 8:11-12; 21:41-44)।"मेरा आत्मा सदा तक मनुष्य से वाद विवाद करता नहीं रहेगा।" (उत्पत्ति 6:3)।

- कहानी का दूसरा भाग विवाह के घर के विषय में है। इस कहानी का अर्थ यह है कि परमेश्वर की योजना और उसके उद्देश्य कभी असफल न हो सकते हैं और न होगें (यशायाह 14:24,27)। यदि एक राष्ट्र एक उपकरण के रूप में परमेश्वर की योजनाओं को पूरा करने में असफल हो गये, तो परमेश्वर सारी दुनिया के मसीहियों को उसकी योजना को पूरा करने के लिए इस्तेमाल करेगें। (मत्ती 28:19; लूका 24:44-47; 1 पतरस 2:9-10)
- कहानी का तीसरा भाग विवाह के वस्त्र न पहनने वाले व्यक्ति के बारे में बताता है। इस कहानी का अर्थ यह है कि लोग परमेश्वर के राज्य में केवल उसी की शर्तों पर प्रवेश कर सकते हैं अपनी शर्तों पर नहीं। यीशु मसीह मार्ग सत्य और जीवन है और बिना उसके द्वारा कोई पिता के पास तक नहीं पहुंच सकता। दृष्टान्त का यह विवाह के वस्त्र को ग्रहण करने और उसे धारण करने की व्यक्तिगत जिम्मेदारी के बारे में बताता है।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) ***(प्रतिक्रियाएँ)*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

आज आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से ***छोटी-छोटी प्रार्थना करने के लिए*** समूह में ***बारियाँ लें।***

या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट) ***(सौंपा गया कार्य)*** **अगले अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर "बोने वाले के दृष्टांत" का प्रचार करें, पढ़ाएँ या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **2राजाओं 5,6,17 व 25** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. स्मरण करना। **(2) कलीसिया में पायी जाने वाली गतिविधियां: प्रेरितों 2:42** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 4:1-16।**
   बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।